Scopus
Package Printing
ISSN : 0163-9234
Vol. 73 Issue 1 (2026)

डिजिटल शिक्षा युग में महाभारत की मूल्य शिक्षा चुनौतियां और अवसर

महाबीर सिंह शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र)
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग
निम्स विश्वविद्यालय, राजस्थान, जयपुर
ईमेल आईडी:- mahabirsingh358@gmail.com

डॉ. रश्मि द्विवेदी
सहायक प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग
निम्स विश्वविद्यालय, राजस्थान, जयपुर
ईमेल आईडी:- rashmi.dwivedi@nimsuniversity.org

शोध आलेख सार

आधुनिक युग वास्तव में डिजिटल शिक्षा का युग है, जहाँ कम्प्यूटर और इंटरनेट जैसी डिजिटल तकनीकों ने सूचना संचार, शिक्षा, व्यापार और समाज के हर पहलू को बदल दिया है जिससे जीवन आसान और तेज हो गया है। इंटरनेट के माध्यम से जानकारी की विशाल उपलब्धता में तीव्रता आई है। स्मार्टफोन और सोशल मीडिया से वैश्विक स्तर पर लोगों का आपसी मेल–जोल बढ़ा है।

ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, ई–लर्निंग और वर्चुअल क्लासरूम का उदय हुआ है तथा ई–कॉमर्स और डिजिटल सेवाओं का विकास हुआ है। डिजिटल युग ने आधुनिक दुनिया को एक नई दिशा दी है, जहाँ तकनीक एक अनिवार्य हिस्सा बन गई है और इसे जिम्मेदारी से समझना व उपयोग करना महत्वपूर्ण है।

डिजिटल शिक्षा के युग में भी महाभारत की मूल शिक्षाएँ अत्यंत प्रासंगिक हैं। यह महाकाव्य जीवन के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत प्रदान करता है, जो आधुनिक दुनिया की जटिलताओं, विशेषकर ऑनलाइन इंटरैक्शन और सूचना के प्रवाह से संबंधित चुनौतियों का समाधान करने में मदद कर सकता है। डिजिटल शिक्षा के युग में भी महाभारत की मूल शिक्षाएँ अत्यंत आवश्यक है। यह महाकाव्य हमें नैतिक दुविधाओं से निपटने, कर्तव्य पालन को प्राथमिकता देने और ज्ञान के महत्व को समझने में मदद करता है। डिजिटल शिक्षा युग में महाभारत की मूल शिक्षाएं एक नैतिक कम्पास के रूप में काम करती हैं जो व्यक्तियों को ज्ञान, ईमानदारी और जिम्मेदारी के साथ आधुनिक दुनिया की चुनौतियों का सामना करने के लिए मार्गदर्शन करती है। महाभारत हमें तकनीक के बावजूद, मानवीय मूल्यों, नैतिकता और जीवन के गहरे सत्यों को समझने की शिक्षा देता है, जो हर युग में प्रासंगिक रहती है।

महाभारत की मुख्य शिक्षा है कि धर्म की अधर्म पर हमेशा विजय होती है। डिजिटल दुनिया में, जहाँ साइबर बुलिंग, फेक न्यूज और ऑनलाइन धोखाधड़ी आम है, धर्म के मार्ग पर चलने का सिद्धांत व्यक्तियों को नैतिक आचरण बनाए रखने और सही के लिए खड़े होने के लिए प्रेरित करता है। भगवान कृष्ण का यह उपदेश कि व्यक्ति को फल की चिंता किए बिना अपना कर्तव्य निभाना चाहिए, डिजिटल पेशेवरों के लिए महत्वपूर्ण है। यह उन्हें परिणामों की तत्काल चिंता किए बिना अपने काम पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है।

यह महाकाव्य नेतृत्व और नैतिक निर्णय लेने के कई उदाहरण प्रस्तुत करता है। डिजिटल युग में सूचना के अतिभार के बीच सही और गलत के बीच अंतर करने और विवेकपूर्ण निर्णय लेने के लिए युधिष्ठिर के धैर्य और कृष्ण की बुद्धि से प्रेरणा ली जा सकती है। कौरवों का अहंकार और लालच ही उनके विनाश का कारण बना। यह डिजिटल दुनिया में भी उतनी ही सच है जहाँ अत्यधिक व्यावसायिक सफलता या ऑनलाइन प्रसिद्धि का घमंड विनाशकारी हो सकता है। विनम्रता और संतोष महत्वपूर्ण गुण हैं।

Copyright : © 2025. This is an open access article distributed under the terms of the CC BY NC 4.0.

अभिमन्यु की कहानी सिखाती है कि अधूरा ज्ञान खतरनाक होता है। डिजिटल शिक्षा के संदर्भ में यह पूरी तरह से शोध किए बिना या जानकारी की सत्यता की पुष्टि किए बिना कोई भी जानकारी साझा करने या उस पर विश्वास करने के खतरों को उजागर करता है। पांडवों ने अपने वनवास के दौरान कई उतार–चढ़ाव देखे और खुद को नई परिस्थितियों के अनुसार ढाल लिया। तेजी से बदलती तकनीक और डिजिटल परिदृश्य में व्यक्तियों और संगठनों के लिए लचीलापन और अनुकूलनशीलता आवश्यक है। कर्ण की कहानी दर्शाती है कि बुरी संगति विनाश का कारण बन सकती है। ऑनलाइन समुदायों और नेटवर्किंग में यह सबक महत्वपूर्ण है कि हम किसके साथ जुड़ते हैं और किन विचारों को अपनाते हैं।

मूलशब्द डिजिटल शिक्षा युग, महाभारत, मूल्य शिक्षा, सूचना संचार।

महाभारत की शिक्षाएं आज के डिजिटल युग में नैतिक शिक्षा के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करती हैं जो हमें केवल जानकार ही नहीं, बल्कि ज्ञानी और नैतिक रूप से मजबूत बनाती हैं ताकि हम डिजिटल माध्यमों का उपयोग समाज के उत्थान के लिए कर सके। महाभारत में कर्तव्य के पालन पर बल दिया गया है भले ही परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन क्यों न हो ऑनलाइन दुनिया में जहाँ गुमनामी संभव है, यह सिद्धांत महत्वपूर्ण है। यह हमें साइबर–धमकी से बचने, ऑनलाइन ईमानदारी बनाए रखने और अपनी डिजिटल जिम्मेदारियों को निभाने की याद दिलाता है। सत्यनिष्ठा और ईमानदारी महाभारत में अत्यधिक मूल्यवान गुण हैं। गलत सूचना और फेक न्यूज के युग में यह हमें तथ्यों की पुष्टि करने, ईमानदारी से संवाद करने और विश्वसनीय जानकारी साझा करने के लिए प्रोत्साहित करता है। महाकाव्य जटिल नैतिक दुविधाओं से भरा है, जो हमें सोचने और सूचित निर्णय लेने पर जोर देता है। ऑनलाइन दुनिया में त्वरित निर्णय लेने होते हैं कि क्या साझा करना है, किस पर विश्वास करना है। महाभारत का सबक हमें जल्दबाजी में प्रतिक्रिया करने के बजाय विवेकपूर्ण निर्णय लेने में मदद करता है। विद्या को एक शक्ति का स्रोत माना गया है जो अंधकार को मिटाकर प्रकाश फैलाती है। डिजिटल शिक्षा ज्ञान प्राप्त करने के असीम अवसर प्रदान करती है। यह शिक्षा हमें अपनी योग्यता बढ़ाने, बाधाओं को दूर करने और आत्म साक्षात्कार की ओर बढ़ने में मदद करती है। कौरवों की कहानी सिखाती है कि अहंकार, लोभ और गलत संगति विनाश का कारण बनते हैं। सोशल मीडिया पर प्रसिद्धि या भौतिकवादी चीजों के पीछे भागने से निराशा हो सकती है। यह सबक हमें विनम्र रहने और विनाशकारी ऑनलाइन प्रवृत्तियों से बचने की याद दिलाता है। हर कार्य का परिणाम होता है। ऑनलाइन कार्यों के भी वास्तविक जीवन में परिणाम होते हैं। कर्म का सिद्धांत हमें अपने ऑनलाइन व्यवहार के प्रति सचेत रहने की शिक्षा देता है।

संक्षेप में महाभारत हमें तकनीक के बावजूद मानवीय मूल्यों, नैतिकता और जीवन के गहरे सत्यों को समझने की शिक्षा देता है, जो हर युग में प्रासंगिक रहती है।

डिजिटल शिक्षा युग में महाभारत की मूल्य शिक्षा की आवश्यकता –

डिजिटल युग में महाभारत की मूल्य शिक्षा की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि यह आधुनिक तकनीक के दौर में भी हमें नैतिकता, सत्यनिष्ठा, धर्म, कर्तव्य, एकता, साहस और निष्पक्षता जैसे शाश्वत मानवीय मूल्यों की सीख देती है। जो भौतिकवाद और पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव से इन मूल्यों को खो रहे हैं, महाभारत की मूल्य शिक्षा नागरिकों को सही गलत के बीच अंतर को समझाती है।

नैतिक मार्गदर्शन – डिजिटल माध्यमों पर फैली गलत सूचनाओं और अनैतिक व्यवहार के बीच महाभारत धर्म और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है जो डिजिटल दुनिया में दिशाहीनता से बचाती है।

चरित्र निर्माण – एकलव्य, कर्ण और अर्जुन जैसे पात्रों के माध्यम से यह हमें साहस, निष्ठा और त्याग जैसे शाश्वत मूल्यों को सिखाती है जो डिजिटल दुनिया में खोते जा रहे हैं।

सामाजिक मूल्यों का संरक्षण – पश्चिमीकरण और भौतिकवाद के प्रभाव से भारतीय संस्कृति और मूल्यों के क्षरण को रोकने के लिए महाभारत हमें अपनी जड़ों से जुड़ने और सामाजिक नैतिक मूल्यों को बनाए रखने का संदेश देती है।

Copyright : © 2025. This is an open access article distributed under the terms of the CC BY NC 4.0.

समस्या समाधान – यह हमें सिखाती है कि कैसे दिन प्रतिदिन की समस्याओं और संकटों का सामना करना है जैसे अर्जुन ने मोह त्यागकर कर्तव्य को चुना।

डिजिटल साक्षरता के साथ नैतिक साक्षरता – जहाँ डिजिटल शिक्षा तकनीकी कौशल सिखाती है वहीं महाभारत नैतिक और आध्यात्मिक साक्षरता देती है जो तकनीकी प्रगति के साथ आवश्यक है ताकि हम तकनीक का दुरुपयोग न करें।

सत्य और न्याय की स्थापना – महाभारत हमें सिखाती है कि छल और अन्याय का परिणाम बुरा होता है और अंततः सत्य की ही जीत होती है जो आज के समाज के लिए महत्वपूर्ण है।

उद्देश्य –

1. नैतिक और सदाचारी व्यवहार – महाभारत धर्म, कर्म और नैतिकता के सिद्धांतों पर जोर देता है। डिजिटल दुनिया में जहाँ साइबर–धमकी, ऑनलाइन धोखाधड़ी और गलत सूचना आम है, नैतिक निर्णय लेने की क्षमता सिखाने में ये सिद्धांत महत्वपूर्ण हैं।
2. आलोचनात्मक सोच और निर्णय लेना – महाकाव्य जटिल स्थितियों और नैतिक दुविधाओं से भरा है जैसे कि कुरुक्षेत्र का युद्ध। इन कहानियों का विश्लेषण करने से छात्रों को बहु दृष्टिकोण से सोचने जानकारी का मूल्यांकन करने और आलोचनात्मक निर्णय लेने के कौशल विकसित करने में मदद मिल सकती है जोकि ऑनलाइन जानकारी की अधिकता को देखते हुए महत्वपूर्ण है।

नेतृत्व और टीम वर्क – पांडवों और कौरवों की कथाएं विभिन्न नेतृत्व शैलियों और टीम वर्क के परिणामों को दर्शाती है। डिजिटल शिक्षा सहयोग उपकरण और आभासी टीम परियोजनाओं के माध्यम से इन पाठों को लागू करने का अवसर प्रदान करती है।

मानवीय मूल्य और सहानुभूति – महाभारत मानवीय भावनाओं संबंधों और संघर्षों की गहराई से पड़ताल करता है। ये कहानियाँ छात्रों में सहानुभूति और करुणा विकसित करने में मदद कर सकती हैं जिससे वे एक अधिक समावेशी और सहायक ऑनलाइन समुदाय बना सकते हैं।

तनाव और संघर्ष प्रबंधन – महाकाव्य में संघर्ष समाधान और शांति स्थापना के प्रयास प्रमुखता से सिखाए गए है। ये अन्तर्दृष्टि छात्रों को वास्तविक दुनिया और आभासी दुनिया दोनों में संघर्षों को शान्तिपूर्ण ढंग से प्रबंधित करने के तरीके सिखा सकती है।

संक्षेप में डिजिटल शिक्षा युग में महाभारत की मूल्य शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को केवल अकादमिक ज्ञान प्रदान करना नहीं है बल्कि उन्हें एक जिम्मेदार विचारशील और नैतिक नागरिक बनाना है जो डिजिटल दुनिया की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हो।

चुनौतियाँ

भावात्मक जुड़ाव का अभाव – गुरुकुल प्रणाली का मुख्य आधार गुरु–शिष्य का प्रत्यक्ष संबंध था जो डिजिटल माध्यम में कम हो जाता है, जिसमें एकाग्रता और व्यक्तिगत मार्गदर्शन मुश्किल होता है।

नैतिकता और सत्यनिष्ठा – डिजिटल युग में कॉपी करना, धोखा देना आसान है जिससे महाभारत के सत्य और धर्म के सिद्धांतों का पालन करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

ध्यान भटकना – ऑनलाइन शिक्षा में छात्रों का ध्यान आसानी से भटक सकता है जिससे वे ज्ञान मंथन से दूर हो सकते हैं।

तकनीकी असमानता – सभी छात्रों और शिक्षकों के पास समान डिजिटल संसाधन नहीं होते जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में अंतर आता है।

सामाजिक अलगाव – स्क्रीन टाइम बढ़ने से बच्चे सामाजिक रूप से अलग–थलग महसूस कर सकते हैं जबकि महाभारत शिक्षा सामाजिक जिम्मेदारी पर जोर देती है।

अवसर –

व्यापक पहुँच – डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से महाभारत के नैतिक मूल्यों, भगवद गीता के उपदेशों और प्राचीन ज्ञान को दुनिया भर के छात्रों तक पहुँचाया जा सकता है।

व्यावहारिक शिक्षा – वीडियो, सिमुलेशन और इंटरैक्टिव मॉड्यूल के जरिए युद्ध रणनीति, दर्शन जैसे विषयों को ज्यादा आकर्षक और व्यावहारिक बनाया जा सकता है जैसा कि गुरुकुल में होता था।

Copyright : © 2025. This is an open access article distributed under the terms of the CC BY NC 4.0.

चरित्र निर्माण में तकनीक का उपयोग – डिजिटल टूल का उपयोग करके छात्रों में नैतिकता, टीमवर्क और नेतृत्व जैसे गुणों का विकास किया जा सकता है जो महाभारत के मुख्य पात्रों में थे।

मूल्यों का स्पष्टीकरण – महाभारत के प्रसंगों को आज की नैतिक दुविधाओं से जोड़कर सिखाया जा सकता है जिससे छात्र वास्तविक जीवन की चुनौतियों का सामना कर सकें।

लचीलापन और व्यक्तिगत सीखना – छात्र अपनी गति से सीख सकते हैं जिससे व्यक्तिगत कमजोरियों पर काम किया जा सकता है जो पारंपरिक प्रणाली में मुश्किल था।

निष्कर्ष

डिजिटल युग में महाभारत की शिक्षाओं को अपनाने के लिए हमें तकनीक का उपयोग करना होगा लेकिन इसके मूल सिद्धांतों को नहीं भूलना होगा। चुनौतियों के बावजूद डिजिटल माध्यम हमें प्राचीन ज्ञान को आधुनिक तरीके से प्रसारित करने और छात्रों को डिजिटल दुनिया के नैतिक सवालों के लिए तैयार करने का एक बड़ा अवसर प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा, राजेश, (2020), भारतीय प्राचीन शिक्षा और आधुनिक संदर्भ, दिल्ली ज्ञानप्रकाशन।
2. त्रिपाठी, सीमा, (2019), योग, ध्यान और शिक्षा में उनका महत्व, प्रयागराज संस्कृति प्रकाशन।
3. वर्मा, अमित, (2018), भारतीय दर्शन और नैतिक शिक्षा, जयपुर, अरूण प्रकाशन।
4. चतुर्वेदी, रश्मि, (2021), आधुनिक शिक्षा में सांस्कृतिक धरोहर का समावेश, लखनऊ शिक्षा विकास केंद्र।
5. पाण्डेय, अनुराग, (2017), प्राचीन गणित और खगोलशास्त्र का आधुनिक शिक्षा में योगदान वाराणसी शास्त्रीय प्रकाशन।
6. मिश्रा, कविता, (2020), भारतीय संगीत, नृत्य और नाटयकला का शैक्षिक महत्व, भोपाल कला एवं संस्कृति प्रकाशन।
7. शुक्ला, दीपक (2019), प्राचीन ज्ञान और व्यक्तित्व विकास, दिल्ली, ज्ञानदीप।
8. राघव, प्रिया, (2021), आधुनिक शिक्षा और प्राचीन दर्शन का संगम, जयपुर शिक्षा प्रकाशन।
9. चौधरी, सुनीता, (2018), नैतिक शिक्षा और सांस्कृतिक मूल्यों का विकास, लखनऊ विद्या निकेतन।
10. सिन्हा, मोनिका, (2020), प्राचीन विज्ञान और आधुनिक तकनीकी शिक्षा पटना विज्ञान एवं शिक्षा प्रकाशन।
11. अग्निहोत्री, रवि, (2019), भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुरूकुल पद्धति का महत्व, दिल्ली शिक्षा भारती।
12. कुमार, हेमंत, (2021), सांस्कृतिक संवेदनशीलता और वैEक दृष्टिकोण का विकास, मुंबई ज्ञानकोश प्रकाशन।
13. तिवारी, शिल्पा, (2018), भारतीय प्राचीन शिक्षा और आधुनिक पाठयक्रम, जयपुर, विद्या सागर।
14. पाठक, सुभाष, (2020), प्राचीन भारतीय ज्ञान और नैतिक मूल्य, इलाहाबाद, संस्कृति प्रकाशन।
15. देशमुख, रश्मि, (2019), आधुनिक शिक्षा में प्राचीन कला और शास्त्रीय शिक्षा का समावेश पुणे, ज्ञानभारती।

Copyright : © 2025. This is an open access article distributed under the terms of the CC BY NC 4.0.